फरवरी 2018

वर्ष : 1 अंक : 5

सिफरी मासिक समाचार

मात्स्यिकी के गौरवशाली 70 वर्ष

निदेशक की कलम से

सभी पाठको के समक्ष सिफरी मासिक पत्रिका का पंचम अंक प्रस्तुत है। जनवरी एवं फ़रवरी महीनो में संस्थान की अनुसन्धान, विकास एवं प्रसार की सभी गतिविधियों का संकलन इस अंक में किया गया है। पिछले महीने FSSSI परियोजना के अंतर्गत मछलियों में फार्मलीन की मिलावट को पता करने के लिए नयी किट "सिफ्लिन" का विकास किया गया। 17 फरवरी, 2018 को कोलकाता स्थित परिषद् के सभी संस्थानों एवं केन्द्रों के वैज्ञानिको के साथ एक इंटरफ़ेस मीटिंग का आयोजन संस्थान के मुख्यालय बैरकपुर में किया गया।

संस्थान ने 18-19 फरवरी, 2018 को सुंदरबन के आदिवासी क्षेत्रो में दो जागरूकता शिविरों का आयोजन किया, इस कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. दिलीप कुमार एवं डॉ ए. इ. एकनाथ मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। मॉडल वेटलैंड विकास के लिए भोमरा बील के मत्स्यजिवी सहकारी समिति के साथ परियोजना हेतु एक समझौते पर हस्ताक्षर किया गया ताकि आजीविका एवं स्वदेशी मछलियों की बहाली हेतु अनुसन्धान कार्य यहाँ किये जा सके। ओडिशा के कालो जलाशय में आदिवासी उप योजना के तहत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं मत्स्य कार्य में उपयोग आने वाले उपकरणों को मत्स्यजिवियो के बीच वितरण किया गया।

संस्थान में इस महीने विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। संस्थान ने कृषक-वैज्ञानिक पारस्परिक संवाद, कृषि प्रोटेक प्रदर्शनी, किसान कॉन्क्लेव और किसानों के इंटरफेस कार्यक्रम में भाग लिया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

झारखंड के चांदिल जलाशय में संस्थान द्वारा पिंजरे में पंगास पालन हेतु मछलियों का भोजन, 'सिफरी केजग्रो' का परीक्षण किया गया। पिंजरे में 52 मछलियों (औसत शारीरिक भार - 163 ग्रा0) को प्रति घन मी0 की दर से रखा गया तथा उन्हें यह भोजन दिया गया। 60 दिनों के पश्चात् यह देखा गया कि मछलियों का शारीरिक भार 336 ग्रा0 हो गया अर्थात् लगभग 142 प्रतिशत की वृद्धि। विकसित फ़ीड वाणिज्यिक फ़ीड की तुलना में दो गुना बेहतर पाया गया।

भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण द्वारा प्रायोजित परियोजना के अंतर्गत मछलियों में फोरमालडिहाइड मिलावट की पहचान के लिये एक किट, 'सिफलिन' को विकसित किया गया है। इसे अगरतला, (त्रिपुरा) भुवनेश्वर, (ओडिशा) तथा हावड़ा (पश्चिम बंगाल) के विभिन्न स्थानीय बाजारों में परीक्षण भी किया गया है।

ओडिशा के काठजोड़ी नदी के नराज बैरेज के सर्वेक्षण में यह देखा गया कि कटक शहर के अवशिष्ट इस नदी के मातागाजपुर स्थान में प्रवाहित होने के कारण इसके जल और तलछट मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इस जल में घुलित ऑक्सीजन की मात्रा नगण्य है तथा बीओडी 95 पीपीएम देखा गया। मानसून पश्चात् नदी में जल की मात्रा बहुत कम हो जाती है।

कावेरी नदी मे मत्स्ययन गियर जालों के अध्ययन में यह देखा गया कि अधिकतर गिल नेट जालो का प्रयोग (59.17 प्रतिशत) हो रहा है। इसके बाद हुक और लाइन जाल (17.20 प्रतिशत), ट्राप जाल (10.89 प्रतिशत), कास्ट जाल (9.86 प्रतिशत), ट्रामेल नेट (2.87 प्रतिशत) आते हैं। इसी प्रकार चालियार में गियर जाल 47.4 प्रतिशत, कास्ट जाल 8.65 प्रतिशत और हुक और लाइन जाल 43.94 प्रतिशत उपयोग किये जाते है।

शैनोन डायवर्सिटी इन्डेक्स के अनुसार चार जलाशयों, नार्गाजुनासागर (तेलंगाना), कृष्णागिरी (तमिलनाडु), मेटुटर(तमिलनाडु), और हरांगी (कर्नाटका) के इक्थियोफौनल डायवर्सिटी क्रमश: 2.45, 2.039, 2.051 और 1.528 दर्ज की गई है।

सिफलिन : मछली में फॉरमॅलिन मिलावट का पता लगाने की पहचान किट

आजकल मछली में फॉरमॅलिन की मिलावट एक गंभीर मुद्दा है और इसकी पहचान करना बहुत ही आवश्यक है। फॉरमॅलिन मिले हुआ भोजन खाने से पेट दर्द, उल्टी आदि होने की संभावना रहती है। फॉर्मलिन कैंसर के लिए एक संभावित प्रेरक रसायन भी है। मछली में फॉरमॅलिन को परिरक्षित के रूप में उपयोग होने से बचाना चाहिए क्योंकि यह कैंसरजन्य पदार्थ है। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मछली में फॉरमॅलिन मिलावट का पता लगाने के लिए एक फॉरमॅलिन पहचान किट "सिफलिन" विकसित की है। सिफलिन किट मछली में फॉरमॅलिन मिलावट का पता लगाने में पुर्णत: सफल पाई गई है।

डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और श्री जे बी डैश, अतिरिक्त निदेशक, मत्स्य निदेशालय, ओडिशा ने ओडिशा राज्य के मत्स्यपालन अधिकारियों के लिए 29 जनवरी 2018 को कटक के निदेशालय में "मछली में फॉरमॅलिन मिलावट के पहचान" पर प्रायोगिक प्रदर्शन कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री डी भांजा, संयुक्त निदेशक (अंतर्स्थलीय) और श्री सुब्रत दास, डी.डी.एफ. समुद्री और विश्व मछली के अधिकारी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

डॉ. बी. पी. मोहंती, डॉ. पी. के. पारिदा और डॉ. ए. मोहंती ने भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की फॉरमॅलिन पहचान किट सिफलिन" के प्रयोग करने की विधि का प्रदर्शन किया और फॉरमॅलिन मिलावट का पता लगाने के लिए राज्य मत्स्यपालन अधिकारियों को प्रयोग करने का तरीका भी सिखाया। निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने ओडिशा राज्य मत्स्यपालन विभाग को 3 सिफलिन किट सौंपे। प्रत्येक किट से लगभग 100 नमूनों का परीक्षण किया जा सकता है।

सागर-द्वीप के आदिवासी मत्स्य कृषको मछुआरों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस संस्थान ने 30 जनवरी से लेकर 3 फरवरी, 2018 के मध्य सागर-द्वीप, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल, के कुल 23 आदिवासी मत्स्य कृषको के लिए पांच दिनों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था| जिसके अंतर्गत मूल्यांकन-सत्र की जरूरतों की पहचान करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था| इस सत्र में प्रशिक्षण हेतु एक समयबद्ध अनुसूची को तैयार किया गया जिसका शीर्षक था 'आदिवासी मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए उपेक्षित जल निकायों का उपयोग'। मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन प्रबंधनो के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया, जिनमें खाद्य, बीमारी प्रबंधन,

आर्द्रभूमि मत्स्य पालन आदि शामिल थे। इसके अंतर्गत व्यावहारिक रूप से भी प्रशिक्षण उपलभ्य करवाया गया था। मथुरा बील और सीआईएफए, कल्याणी, पश्चिम बंगाल केन्द्र स्थित प्रशिक्षण केन्द्र पर भी एक फील्ड एक्सपोजर की व्यवस्था की गई थी । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास की अध्यक्षता में किया गया था जिसमें सीआईएफए के पूर्व निदेशक डा. एन. सारंगी, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. सारंगी ने अपने उद्घाटन भाषण में किसानों के साथ संवाद

किया और इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए संस्थान की सराहना की| डॉ. बी. सी. झा पूर्व प्राभागाध्यक्ष, आरडब्ल्यूएफ प्रभाग, ने श्रमिकों के साथ अपने विचारों का आदान प्रदान किया । प्रशिक्षण कार्यक्रम को डॉ. पी. के. परिदा, वैज्ञानिक एवं नोडल आधिकारी टीएसपी, डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिक और डॉ. लियेंथमुलाइया, वैज्ञानिक द्वारा समन्वित किया गया था ।

लोनी आद्रभूमि (वेटलैंड), बुन्देलखंड क्षेत्र के निवासियों के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम।

लोनी आद्रभूमि एक स्वस्थ पारिस्थितिकी के रूप में जाना जाता है| यहाँ मछलियों में विविधता खासतोर से देखी जा सकती है जिसके कारण मात्स्यिकी का गरीबी उन्मूलन, आश्रित आदिवासियों में कुपोषण की समस्या, खाद्य सुरक्षा, स्व-रोजगार और आजीविका के कई साधन सुनिश्चित करने में अहम् योगदान देखा जा सकता है। इस संस्थान का इलाहाबाद केंद्र बहुत समय से लोनी वेटलैंड पर निर्भर आदिवासी मछुआरों की आजीविका को सुनिश्चित करने

के लिए ठोस प्रयास कर रहा है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद केन्द्र ने मछुआरों को प्रेरित करने के उद्देश्य से 8 फरवरी, 2018 को बड़े पैमाने पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमे अन्य विषयों के अलावा पेन और पिंजरे की मात्स्यिकी, जैव-अनुश्रवण, स्पॉन प्रॉस्पेक्टिंग, मुख्य नदी (टोंस/गंगा) और अन्य के साथ झीलों की संयोजकता से जुड़े विषयों पर दीर्घ चर्चा की गयी थी| 60 से अधिक जनजातीय मछुआरों(जिसमे 20 महिलाओं भी

थी) और लोनी वेटलैंड के 30 अन्य मछुआरों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में मछुआरों को एकीकृत खेती प्रणाली के जरिए आर्द्रभूमि के विकास

और पर्यटन के विकास के लिए अतिरिक्त निवेश हेतु स्व-सहायता समूह बनाने का प्रयास करने के लिए प्रेरित किया ताकि बैंकों के साथ संबद्धता बनायीं जा सके । इस जागरूकता शिविर को मुख्य रूप से मीडिया (दूरदर्शन और पी.टी.आई.) ने भी कवरेज किया और एक विस्तृत वृत्तचित्र भी तैयार किया । भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान , इलाहाबाद के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. श्रीवास्तव ने सहकारी सोसायटी के सदस्यों का स्वागत किया और लोनी वेटलैंड के विकास में केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की भूमिका का विस्तारपूर्वक विवरण बताया।

टीएसपी के तहत ओडिशा में कालो जलाशय में मछली पकड़ने के उपकरण का जागरूकता अभियान-सह-वितरण

टीएसपी के तहत ओडिशा में कालो जलाशय के पास एक जागरूकता शिविर के अन्तर्गत वैज्ञानिक कृषक बातचीत के दौरान, संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने दिनाक 12 फरवरी, 2018 को मछुआरों को उत्पादन बढ़ाने के लिए जलाशय में उन्नत फ़िंगलिंग स्टॉकिंग के महत्व को समझाया। उन्होंने

नर्सरी तैयार करके मछुआरों को जलाशय में उन्नत फिंगलिंग के लिए अंडे बढ़ाने का सुझाव भी दिया। उप निदेशक श्री शशिकांत आचार्य ने मछुआरों को प्रभावी कार्य प्रणाली के लिए प्रतिदिन की गतिविधियो के लिए सहकारी प्रशासन की व्यवस्था और जलाशय के बेहतर प्रबंधन पर

जोर दिया। जिला मत्स्य पालन अधिकारी (मयूरभंज) श्री एस. के. घडी ने मछुआरों को सलाह दी कि जलाशय से बेहतर उत्पादन के

लिए छोटे आकार के कार्प्स को पकड़ने से बचना चाहिए। डॉ.पी.के. परिदा, वैज्ञानिक और नोडल अधिकारी, टीएसपी और श्री एच. एस. स्वैन, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने उत्पादन बढ़ाने के लिए सामाजिक रूप से विकसित मत्स्य पालन के तरीकों में अन्य सावधानियों के बारे में मछुआरों से चर्चा की। बैठक में 60 जनजातीय मछुआरे और उनके प्रतिनिधियों ने जलाशयो में उच्च उत्पादन पर अपने विचार प्रस्तुत किये। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने मछुआरों और आदिवासी मछुआरों को गेल जाल की 4 इकाइयों का वितरण भी किया।

मॉडल वेटलैंड विकास :आजीविका सुरक्षा और स्वदेशी मछलियों कि बहाली

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने एन.आई.सी.आर.ए.आर.ए. परियोजना के अंतर्गत आजीविका सुरक्षा के लिए मॉडल वेटलैंड विकास और स्वदेशी मछलियों की बहाली के लिए भी एक कार्यक्रम की शुरुआत की। आर्द्रभूमि मत्स्य पालन पर जलवायु

परिवर्तनशीलता के प्रभाव से आवास, जलीय जैव विविधता, मछली उपजता, जलीय खरपतवार प्रसार, विदेशी प्रजातियों का प्रभुत्व आदि का मछुआरों की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस पृष्ठभूमि में 16 फरवरी 2018 को भोमरा बील, हर्षघाटा, पश्चिम बंगाल में एन.आई.सी.आर.ए.ए. परियोजना के तहत आजीविका सुरक्षा और स्वदेशी मछलियों की बहाली के लिए मॉडल वेटलैंड के विकास पर एक नूतन कार्यक्रम की शुरुआत की गयी। इस कार्यक्रम में डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के अलावा राज्य के मत्स्यपालन अधिकारी, विभिन्न मछुआरे और अन्य हितधारक उपस्थित थे।

डॉ.यू. के.सरकार, विभागयाध्यक्ष, जलाशय और वाटरलैंड फिशरीज डिवीजन, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मुख्य अनुवेशक, एनआईसीआरए ने अपने स्वागत नोट में कहा कि आर्द्रभूमि मत्स्य

पालन और स्वदेशी मछली संरक्षण के विकास के लिए जलवायु स्मार्ट रणनीतियों का बहुत महत्व है। जलवायु आधारित प्रौद्योगिकियों और अनुकूलन रणनीतियों के माध्यम से मछुआरे जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव का सामना कर सकते हैं। डॉ सरकार ने जिले के राज्य मत्स्य पालन अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत उत्साह और समर्थन की भी सराहना की। अपने संबोधन में, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय

मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने मछुआरों को पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करने के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन रणनीतियों और तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया | उन्होंने उच्च मूल्यों वाली छोटी स्वदेशी मत्स्यप्रजातियों के संरक्षण पर बल दिया और मछुआरों को सामाजिक समूहों का गठन और मूल्य श्रृंखला तैयार करने का सुझाव भी दिया| इसी दौरान भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने भोमरा बील में

बाढ़ा (पेन) प्रदर्शन के लिए बीएफसीएस लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम में सहकारी समिति के 50 से अधिक मछुआरों, वैज्ञानिकों और अन्य कर्मचारियों के अलावा एनआईसीआरए प्रोजेक्ट, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के सदस्य भी शामिल हुए थे।

कोलकाता स्थित आईसीएआर संस्थानों की इंटरफेस मीटिंग का आयोजन

कोलकाता के सभी आईसीएआर-संस्थानों/केंद्रों के साथ सक्रिय सहयोग के

लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में 17 फरवरी,2018 को "कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की परियोजनाओ और बहु अनुशासनिक दृष्टिकोण के विकास" विषय पर एक दिवसीय बैठक की गयी। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. ए.ई. एकनाथ, पूर्व डी. जी., एन.ए.सी.ए. इस बैठक में उपस्थित थे। सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार

दास ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि इस कार्यशाला (इंटरफ़ेस बैठक) का प्रमुख उद्देश्य किसानों की भलाई के लिए सभी आईसीएआर संस्थानों के लिए एकल मंच बनाना है। उन्होंने यह भी आशा व्यक्त की कि इस कार्यशाला में आईसीएआर के सभी संस्थानों का सामंजस्य जरुरी है ताकि किसानों की सहायता की जा सके। कोलकाता क्षेत्र में मौजूद आईसीएआर संस्थानों के बहुआयामी दृष्टिकोण, विस्तृत क्षमता और उपलब्ध सुविधा का साझा उपयोग इस कार्यशाला के मुख्य एजेंडे में शामिल थे। डॉ. ए. ई. एकनाथ ने किसानों की भलाई के लिए सभी विभागों-उपविभागों और विशेष रूप से डॉ. बसन्त कुमार दास, इस संस्थान के निदेशक, को शुरुआत करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस प्रकार का प्रयास शोधकर्ताओं के लिए एक शानदार अवसर साबित हो सकता है| डॉ. जीबोन मित्रा, निदेशक (कार्यकारी), आई.सी.ए.आर-सी.आर.आई.जे.ए.एफ ने कहा कि यहाँ फसल आधारित, पशुधन आधारित, मछली आधारित अध्यापन और विस्तार बहुआयामी दृष्टिकोण के लिए आवश्यक है। डॉ. बी. साहा, प्रधान वैज्ञानिक आईसीएआर-एन.आई.आर.जे. ए. एफ.टी. ने कहा की किसानों की आय के दोहरीकरण के लक्ष्य को पूरा करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए|

जनजातीय उप-योजना (टीएसपी) स्मार्ट गांव अवधारणा, मेरा गांव मेरा गौरव

(एम.जी.एम.जी). लैब की सुविधाएं और ज्ञान साझा करना आदि पर सबका एकमत दिखाई दिया। इस अवसर पर डॉ. एस. के. सामंता, प्रमुख वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

आदिवासी उप योजना के तहत सुंदरबन में जागरूकता शिविरों का आयोजन

आदिवासी उप योजना (टीएसपी) के तहत सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मत्स्य पालन के द्वारा विभिन्न आदिवासियों की आजीविका को बढ़ाने के लिए दो जागरूकता शिविरो का आयोजन किया | दिनांक 18 फरवरी 2018 के दिन अंबोली गांव, गोसाबा, सुंदरबन के 600 जनजातीय मछुआरों ने इस जागरूकता शिविर में भाग लिया जिसका उद्देश्य था मत्स्य पालन के माध्यम से क्षेत्र में अनुपयुक्त नहरों की क्षमता का पता लगाना और मछली उत्पादन में सुधार करना। वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा मछली उत्पादन के लिए घर के तालाबों और गांव की नहरों का उपयोग करने की सलाह दी गई । इसके दूसरे दिन (18 फरवरी 2018) को कलिताला ग्राम, हिंगलगंज, सुंदरबन में 150 जनजातीय मछुआरों के लिए एक दूसरे जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस क्षेत्र के सुधार हेतु नहर में मत्स्य पालन के लिए आदिवासी मछुआरों को मछलियों (1.25 टन) का वितरण किया गया। डॉ. ए. ई. एकनाथ, पूर्व डीजी, एन.ए.सी.ए; डॉ दिलीप कुमार, पूर्व वी.सी., आई.सी.ए.आर-सी.आई.एफ.ई., डॉ. वी. आर. चित्रांशी, पूर्व एडीजी (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी, भाकृअनुप), डॉ. बी. सी. झा, पूर्व प्रभाग्यध्यक्ष, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और डॉ. बी.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने आदिवासी मछुआरों के साथ अपने विचार साँझा किये । संवादात्मक सत्रों के दौरान डॉ. ए. ई. एकनाथ ने नहरों में मछली उत्पादन को बढ़ाने के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय

मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित दिशानिर्देशों का पालन करने के लिए मत्स्य किसानों को सलाह दी। इस अवसर पर पूर्व एडीजी अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी डॉ. वी. आर. चित्रांशी ने मौजूदा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और आदिवासी मछुआरों को मत्स्य विविधता के संरक्षण के लिए विभिन्न तरीकों का सुझाव भी दिया। डॉ. बी. सी. झा, पूर्व प्रभाग्याध्यक्ष, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने आदिवासी मत्स्य किसानों से आग्रह किया की वे इस संस्थान द्वारा विकसित मत्स्य पालन के तरीको से अपनी आजीविका बढ़ाने का प्रयास करे। आई.सी.ए.आर-सी.आई.एफ.ई. के पूर्व उप-कुलपति डॉ दिलीप कुमार ने भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान से एक नए रूप में नहर मत्स्य पालन को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने आदिवासी मत्स्य किसानों को बताया कि समुदाय आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से मछली उत्पादन और आजीविका को बढ़ाने हेतु नहरों का वैज्ञानिक तरीके से विकास करना चाहिए ।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने मत्स्य विकास के लिए संस्थान द्वारा परिसेवा के बारे में आदिवासियों को बताया कि संस्थान ने मत्स्य विकास के लिए 15 युवाओं को क्षमता विकास और पानी-मिट्टी की गुणवत्ता परीक्षण के लिए 15 अन्य युवाओं को समय-समय पर उचित प्रशिक्षण दिया । उन्होंने किसानों को मछली के उत्पादन और अंतर्स्थलीय खुले जल से आजीविका बढ़ाने के लिए अपने उद्यमी कौशल को विकसित करने की भी सलाह दी। शिविर के दौरान डॉ. ए.के.दास, प्रधान वैज्ञानिक, डा. पी. के. परिदा, नोडल ऑफिसर, टीएसपी, डॉ. लियन्थुमुलाइआ, वैज्ञानिक और श्री सी. एन. मुखर्जी, सीटीओ ने भी आदिवासी मछुआरों के साथ बातचीत की और वैज्ञानिक मछली पालन के लिए विभिन्न तरीको की जानकारी प्रदान की।

हसनाबाद, पश्चिम बंगाल के चिंराट किसानों के लिए एएचपीएनडी / ईएमएस पर जागरूकता कार्यक्रम

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मत्स्य विभाग, सरकार के सहयोग से उत्तर 24 परगना के हसनाबाद में "एक्यूट हेपेट अपैक्रेटीक नेकोसिस डिज़ेज़"

एएचपीएनडी अर्ली मर्सटाइटी सिंड्रोम (ईएमएस) पर एक जन जागरूकता शिविर का आयोजन किया। संस्थान के डा. ए. के. बेरा, प्रधान वैज्ञानिक, डा. पी. के. परिदा, वैज्ञानिक और सुश्री तनुजा अब्दुल्ला, वैज्ञानिक; प्रो. गदाधर दास, प्रोफेसर, डब्ल्यू. बी. यू. ए. एफ. एस; डॉ. टी. जे. इब्राहीम प्रोफेसर, डब्ल्यू. बी. यू. ए. एफ. एस; डॉ. टी. जे. और श्री संपत माझी एडीएफ, पश्चिम बंगाल ने प्रभावित किसानों के साथ बातचीत किया । इस कार्यक्रम का उद्देश्य ए.एच.पी.एन.डी. और उसके प्रभाव तथा एहतियाती कदमों के बारे में में जागरूक करना था। श्री माजी ने इस कार्यक्रम के बारे में सबको बताया और डॉ. पी. के. परिदा ने ए.एच.पी.एन.डी./ ई.एम.एस. से होने वाले आर्थिक नुकसान का विवरण प्रस्तुत किया। डा. गदाधर दास ने स्वस्थ बीजो की पहचान करने के तरीके और भंडार घनत्व को बनाए रखना, सावधानी बरतने के तरीके आदि के बारे में सूचित किया। इस कार्यक्रम में हसनाबाद के मकलगछा और सुल्कौनी गांवों के 100 किसानों ने भाग लिया । इस कार्यक्रम को आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर, एनएफडीबी और भारत सरकार द्वारा समर्थन दिया गया था ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

6 से 12 फरवरी 2018 तक बिहार के खगड़िया जिले के 31 मछुआरों के लिये “अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन” पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि भोजन, रोग प्रबंधन, आद्रभूमि मत्स्य पालन आदि पर प्रशिक्षित किया गया ।

16 से 22 फरवरी 2018 तक बिहार के बेगुसराय जिले के 26 मछुआरों के लिये ”अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन” पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया ।

जनजाति उपयोजना के अंर्तगत सुन्दरवन में नहर मात्स्यिकी विकास पर दिनांक 18 फरवरी 2018 को गोसाबा के अम्तोली में तथा दिनांक 19 फरवरी 2018 को हिंगलगंज के कालातला में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

संस्थान ने दिनांक 21 से 22 फरवरी 2018 को राष्ट्रीय जल अकादमी, पुणे के सहयोग से फिश पास डिजाइन विषय पर एक प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया।

महत्वपूर्ण बैठके

दिनांक 29 जनवरी 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मात्स्यिकी विभाग, ओडिशा सरकार के बीच कटक में बैठक आयोजित हुई।

दिनांक 30 जनवरी 2018 को संस्थान ने केन्द्रीय जल आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित गंगा नदी के न्युनतम पर्यावरणीय प्रवाह पर बनी समिति की दूसरी बैठक में भाग लिया।

दिनांक 5 से 6 फरवरी 2018 को संस्थान के वैज्ञानिकों ने भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण, नई दिल्ली के वार्षिक पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

दिनांक 9 फरवरी 2018 को संस्थान ने भुवनेश्वर में विश्व बैंक के टीम के साथ बैठक में भाग लिया।

दिनांक 8 से 10 फरवरी 2018 को भाकृअनुप-भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल द्वारा “ओर्गानिक वेस्ट मैनेजमेंट फॉर फ़ूड एंड एनवायरनमेंट सिक्योरिटी” विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, में संस्थान ने भाग लिया।

प्रसार गतिविधियॉ

दिनांक 3 से 5 फरवरी, 2018 के बीच संस्थान ने केवीएएफएसयू, बीदर, भुत्नल, विजयपुरा (कर्नाटक) के मत्स्य अनुसंधान और सूचना केंद्र के द्वारा आयोजित मेगा फिशरीज प्रदर्शनी 2018 एवं कृषक-वैज्ञानिक पारस्परिक संवाद में भाग लिया।

दिनांक 12 से 14 फरवरी, 2018 के बीच संस्थान ने कोलकाता में भारतीय चैंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा आयोजित 6 वें कृषि प्रोटेक प्रदर्शनी और व्यापार कार्यक्रम में भाग लिया।

दिनांक 16 और 17 फरवरी, 2018 के बीच संस्थान ने आईसीएआर-एनआईएएनपी, अदुगोडी, बैंगलोर में आयोजित 'किसान कॉन्क्लेव' कार्यक्रम में भाग लिया।

दिनांक 19 से 20 फरवरी 2018 के बीच संस्थान ने आईसीएआर-सीपीसीआरआई रिसर्च सेंटर, काहिचुची, असम में "अखरोट आधारित फसल प्रणाली” और कोको पर फील्ड डे के माध्यम से किसानों की आय दुगनी करने पर आयोजित इंटरफेस कार्यक्रम के अवसर पर प्रदर्शनी में भाग लिया।

सम्पादक मंडल की तरफ से

सभी पाठको के समक्ष सिफरी मासिक पत्रिका का पंचम अंक प्रस्तुत है। फ़रवरी महीने में संस्थान की अनुसन्धान, विकास एवं प्रसार की सभी गतिविधिओ का संकलन इस अंक में किया गया है। आशा है आप सभी को हमारा यह प्रयास अच्छा लगेगा। पत्रिका के बारे में अपनी राय से हमें अवश्य अवगत कराये आप सभी को आने वाले पर्व ढोल होली एवं महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाये।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी : सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in